

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com

वीडियो 'खुदी का खेड़ा' की स्क्रिप्ट

हाज़रा-हज़ूर की ऊर्जा से चलने वाला संसार ऐसा कायनाती अजूबा है जो अपने अनंत रूपों में ज़ाहिर होता है। मनुष्य इस सृजना का हिस्सा है जो संसार की विशालता का ज़रा मात्र है। तर्कसंगती की काबिलियत ने उसको यह यकीन करवा दिया है कि वह अलग है और सृजना के बाकी रूपों से बेहतर है। उसका अहंकार उस के अपने-आप को समझने के रास्ते में अड़चन बन जाता है। इस पेशकश द्वारा भारतीय उपमहाद्वीप के संतों की दार्शनिक शब्दावली के ज़रिये मानवीय सूक्ष्मता को खोलने का अदना सा प्रयत्न किया जा रहा है।

भक्ति और सूफी लहरों में भारतीय उपमहाद्वीप के संतों का समय तेरहवीं से सत्तरहवीं सदी के दौरान था जिसमें उन्होंने सामाजिक-मज़हबी सुधार का परचम बुलंद किया। इनमें से कुछ संतों का रूहानी कलाम गुरु ग्रंथ साहब में दर्ज है जो दुनियावी लालसाओं से ऊपर उठकर मनुष्य के अंतर्मन की आरजू को मुख़ातिब हैं।

भारतीय उपमहाद्वीप के संतों के लिए हाज़रा-हज़ूरी ऊर्जा, इज़हार की सूक्ष्मता है जो एक साथ ही सृजनहार, संहारक और विनाशक है। इस ऊर्जा को ज्योत कहते हैं जो कई तरह के मज़हबी दस्तूर में परमात्मा कहलाती है। यह ऊर्जा सृजना के हर कण में हाज़िर है जिस कारण इनमें कोई फ़ासला नहीं है। जैसे समंदर की लहरें उसी में से उठती हैं और उसी में समा जाती हैं। उसी तरह सृजना की बुनियादी पर्त ज्योत का इज़हार कई रूपों में होता है और यह उसी में वापस समा जाती हैं।

सहस तव नैन नन नैन है तोहि कउ सहस मूरत नना एक तोही ॥

सहस पद बिमल नन एक पद गंध बिन सहस तव गंध इव चलत मोही ॥

(राग धनासरी, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब)

तेरी अनेक आंखें हैं लेकिन फिर भी तेरी कोई नहीं है।
तेरे अनेक रूप हैं लेकिन फिर भी तेरा कोई रूप नहीं है।
तेरे अनेक पैर हैं लेकिन फिर भी तेरा कोई पैर नहीं है।
किसी नाक के बिना ही तेरे अनेक नाक हैं।
मेरे को तेरे खेल ने मोह लिया है।
(राग धनासरी, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब)

भारतीय उपमहाद्वीप के संतों ने सृजनहार, संहारक और विनाशक तत्वों को 'ओंकार' के तौर पर मुखातिब किया। गुरु नानक ने 'ओंकार' के आगे अंक एक जोड़ दिया जिस द्वारा सृजना का एकता वाला संदेश मजबूती से पेश होता है।

ॐ सति नाम करता पुरख निरभउ निरवैर अकाल मूरत अजूनी सैभं गुर

प्रसाद ॥

(जप, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब)

समस्त सृजना को चलाने वाली ऊर्जा एक है।
उसके अस्तित्व में सत्य का निवास है।
वह हर सृजना में नाज़र है। बेखौफ़ है।
तेरे-मेरे की भावना से ऊपर है।
उसका रूप युगों-युगों से अटल है।
वह जन्म-मरण के चक्कर से मुक्त है।
वह खुद रौशन है।

उसका अस्तित्व विवेक की रहमत से नाज़ल होता है।

(जप, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब)

आदरणीय संत मानते हैं कि सृजना के हर पक्ष में सर्गुण और निर्गुण का निवास है, हर कण हाज़िर भी है और नाज़िर भी।

सरगुन के पांच तत्व हैं; पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश। पृथ्वी धरती है जो तत्व का ठोस रूप है। जल तत्व का तरल रूप है। अग्नि तत्व की बुनियादी तपस है।

वायु तत्त्व का हवा रूप है। आकाश वह विस्तार है जिसमें यह सारे तत्त्व मिलकर ठोस रूप धारण करते हैं।

निर्गुण में कुदरत के अदृश्य गुणों का इज़हार होता है जो रूप धारण नहीं करता। यह कुदरत के वह पक्ष हैं यह कुदरत के वह पक्ष हैं जो देखने, सुनने, सूंघने, छूने और स्वाद चखने वाली मानवीय इंद्रियों द्वारा नहीं समझे जा सकते।

अविगतो निरमाइल उपजे निरगुण ते सरगुण थीआ ॥

(राग रामकली, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब)

अनंत निरंजन से निरंकार उत्पन्न हुआ है। उस ने निर्गुण से सर्गुण का रूप धारण किया है।

(राग रामकली, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब)

सर्गुण और निर्गुण के खेल में दृश्य और अदृश्य का खेल खेला जाता है जो मानवीय इंद्रियों के लिये भ्रम पैदा करता है और 'माया' कहलाता है। माया के साथ द्वैत उत्पन्न होता है जो सृजना के अलग-अलग पक्षों को जोड़ने वाले धागों से मन को अलग करता है। इसी का नतीजा है कि मनुष्य अपने आपको सृजना के दूसरे पक्षों से अलग समझता है।

माया का जाल गति के तीन रूप द्वारा संचालित हैं। 'तमो', 'रजो' और 'सतो' ! 'तमो' को तमस भी कहते हैं जिसका मायना आलस्य और नाश है। 'रजो' को राजस भी कहते हैं जिसका मायना सरगर्मी और गति है। 'सतो' को सात्त्विक भी कहते हैं जिसका मायना सकारात्मक और निर्मलता है। भारतीय उपमहाद्वीप के संतों की हिदायत है कि आरजूमंद को 'माया' के तीनों रूपों से ऊपर उठ जाना चाहिये और 'तुरिया' की इच्छा करनी चाहिये यहां द्वैत खत्म हो जाता है और एकता के सत्य की समझ आने लगती है।

त्रै वरताइ चउथै घर वासा ॥

काल बिकाल कीए इक ग्रासा ॥

(राग मारू, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब)

इस जगत का प्रसार तीन घरों में जाहिर होता है, चेतना का
निवास चौथे घर में है जो काल और अकाल के दायरे से बाहर है।

(राग मारू, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब)

मनुष्य कुदरत का हिस्सा है और सिर्जना के इन पक्षों का ही जमाजोड़ है। हर तत्व
की बारीक और व्यापक स्तर पर कड़ियां आपस में जुड़ी हुई हैं। इस तरह जो मानवीय
बुत के बाहर है, उसका अंदर भी निवास है।

जो ब्रह्मंडे सोई पिंडे जो खोजै सो पावै ॥

(राग धनासरी, भगत पीपा, गुरु ग्रंथ साहिब)

जो ब्रह्मांड में है वह मनुष्य के बुत में भी है।

आरजूमंद इस हकीकत का भेद बुझ लेता है।

(राग धनासरी, भगत पीपा, गुरु ग्रंथ साहिब)

मानवीय अस्तित्व को बयान करने के लिए संतों ने जिक्र किया कि शरीर 'स्थूल'
और 'सूक्ष्म' तत्वों के जोड़ से बना है। 'स्थूल शरीर' हाज़िर है और 'सूक्ष्म शरीर'
नाज़र है।

'स्थूल शरीर' जाहरा रूप है जिसकी पांच ज्ञान-इंद्रियां हैं: आंखें, कान, नाक, जीभ और
चमड़ी जो दिमाग को देखने, सुनने, सूंघने, स्वाद चखने और स्पर्श के अहसास का
संदेश देती हैं। 'स्थूल शरीर' बाहरी समझ को कर्म इंद्रियों द्वारा प्रतिक्रिया देता है। कर्म
के लिये पांच अंग हैं: हाथ, टांगें, प्रजनन अंग और निकास द्वार। इनके द्वारा समस्त
दुनियावी क्रिया निभाई जाती है इसमें बोलना, स्पर्श करना, सरगर्मी करना, प्रजनन
और निकास शामिल हैं।

'सूक्ष्म शरीर' दरअसल नाज़र रूप है जिसमें चित्त, मन और मत यानी बुद्धि शामिल
हैं। मन, कम से कम प्रतिरोध का मार्ग

'चित्त' देखने वाली विश्लेषणात्मक काबिलियत है। मन और मत की काबिलियत फ़ैसला करने में है। मत वह बुद्धि है जिसके द्वारा नेकी और बदी का अंतर स्पष्ट होता है। मन कम से कम अड़चन वाला रास्ता अपनाने के लिए बहकाता है। 'मन' और 'मत' का द्वंद फ़ैसला करने के मामले में कश्मकश पैदा करता है। इस खींचतान में कामना पैदा होती है जो पांच चोरों का हौसला बुलंद करती है। रूपक के तौर पर काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार इन पांच चोरों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो मनुष्य का चैन छीन लेते हैं।

*अवर पंच हम एक जना किउ राखउ घर बार मना ॥
मारहि लूटहि नीत नीत किस आगैं करी पुकार जना ॥१॥
(राग गौड़ी, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब)*

हे मन, वह पाँच हैं और मैं फ़ानी अकेला हूँ।
मैं तेरे घर-बार की रक्षा कैसे कर सकता हूँ?
विकार मुझे हर रोज़ इखलाक़ के रास्ते से भटकाते हैं।
मैं किस के आगे फ़रियाद करूँ?
(राग गौड़ी, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब)

इन अवगुणों के प्रभाव के खिलाफ़ लड़ने के लिये संतों ने ज्ञान रूपी विवेक को ज़ब्र करने और नाम रूपी आत्मचिंतन को अपनाने की सिफ़ारिश की। इन प्रयत्नों द्वारा आरज़ूमंद 'निवृत्ति मार्ग' के रास्ते पर आ जाता है जो वास्तविकता के आंतरिक मार्ग के तरफ़ जाने वाला अहसास का रास्ता है। यही रास्ता आगे चलकर 'पारवृत्त मार्ग' हो जाता है जो हकीकी तौर पर व्यावहारिक क्रियान्वयन बाहरी रास्ता है। तवाज़न या संतुलन ही धर्म की सर्वोत्तम अवस्था है, जो नेकी और रद्दे-अमल का नेतृत्व करने वाली ताकत है।

*परविरति निरविरति हाठा दोवै विच धरम फिरै रैबारिआ ॥
मनमुख कचे कूड़िआर तिन्नी निहचउ दरगह हारिआ ॥
गुरमती सबद सूर है काम क्रोध जिन्नी मारिआ ॥
(राग मलार, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब)*

कर्म और सोच-विचार धर्म की अगुआई में चलते दो सिरे हैं।
मनमुख कमजोर और नकारात्मक है। वह निस्संदेह अपनी सत्यनिष्ठा
खो देते हैं।

रूहानी प्रवृत्ति वाले मनुष्य योद्धा हैं जो काम और क्रोध पर विजय
हासिल कर लेते हैं।

(राग मलार, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब)

भक्ति लहर के भारतीय उपमहाद्वीप के संतों ने आरजूमंदों को प्रेरणा दी कि वह खुद
की परतों को उभार कर एकता की रौशन-ख्याली में रंगे जायें।

एको धरम दृढ़ै सच कोई ॥

(राग बसंत, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब)

सच ही एकमात्र धर्म है जो सार्वभौमिक नियम है।

(राग बसंत, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब)

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com